'जिपकिट' द्वारा आसान होगा ऊसर मृदा का सुधार एवं लहलहायेगी फसल

भारत में लगभग 67 लाख हेक्टेयर भूमि लवणग्रस्त है जिसमें उत्तर–प्रदेश में लगभग 13.7 लाख हेक्टेयर भूमि ऊसर है। ऊसर भूमि के सुधार हेतु जिप्सम काफी प्रभावी होता है, यदि जिप्सम की उचित मात्रा को ऊसर भूमि के सुधार हेतु ज्ञात कर लिया जाए तो फसलों से अनुकूलतम उत्पादन लिया जा सकता है । ऊसर भूमि शोधन के लिए आवश्यक जिप्सम की मात्रा के निर्धारण के लिये प्रयोगशाला विधि जटिल एवं अधिक समय लेने वाली प्रक्रिया है। चूँकि अधिकतर प्रयोगशालायों में आवश्यक जिप्सम की मात्रा के निर्धारण के लिये विशेषज्ञता एवं सुविधाओं की कमी होती है अतः मृदा क्षारीयता एवं जिप्सम की मात्रा के निर्धारण के त्वरित अनुमान के लिये एक किट का विकास केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय शोध केन्द्र, लखनऊ द्वारा किया गया है । ऊसर भूमि में विनिमेय योगय सोडियम की अधिकता होती है जो अधिकांश फसल पौधों के विकास को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। जिप्सम सबसे सस्ता, आसानी से उपलबध और प्रयोग में सहज है। अतः इसका प्रयोग व्यापक स्तर पर किया जाता है। ऊसर भूमि के सुधार के लिये आवश्यक जिप्सम की मात्रा विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है जैसे सोडियम की संतृप्तता, मृदा संरचना, आवश्यक मृदा सुधार का स्तर, जल की गुणवत्ता और आपेक्षित फसल का उत्पादन आदि। भारतीय गंगा के मैदानी इलाकों में ऊसर मिट्टी के जिप्सम की आवश्यकता ज्ञात करने के लिए 'जिपकिट' विकसित किया गया है जोकि उपयोगकर्ता के अनुकूल है और क्षेत्र के अधिकारियों, शोधकर्ताओं, विभाग के अधिकारियों के साथ–साथ किसानों को फसल उत्पादन की वृध्दि करने के लिए उपयोगी हो सकती है।

प्रत्येक किट को सभी आवश्यक रसाायनों के साथ आपूर्ति की जाती है जिन्हें रिफिल किया जा सकता है। इस फील्ड किट को इस तरह से तैयार किया जाता है कि इसे आसानी से खेत में ही इस्तेमाल किया जा सके और इसके लिए बिजली या किसी बिजली के स्रोत की जरूरत न पड़े। यह तुरंत ऊसर मिट्टी की जिप्सम आवश्यकता का अनुमान लगाती है। इसको पारंपरिक प्रयोगशाला पद्धति से परीक्षण और मान्य की गयी है।

इस जिपकिट तकनीक को एग्रीइनोवेट इंडिया, नई दिल्ली के माध्यम से मैसर्स पाराशर एग्रोटेक बायो प्रा. लिमिटेड, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश को वाणिज्यिक पैमाने पर उत्पादन और विपणन के लिए लाइसेंस भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अनुमोदित किया गया है। इसके लिए मैसर्स पाराशर एग्रोटेक बायो को तीन दिन के प्रशिक्षण के बाद दिनांक 30 दिसंबर, 2020 को प्रौद्योगिकी हस्तांतरित की गई।

इस मौके पर केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ0 प्रबोध चन्द्र शर्मा की मौजूदगी में जिपकिट तकनीक का हस्तांतरण तकनीक विकसित करने वाले संस्थान के वैज्ञानिक डॉ0 संजय अरोड़ा, डॉ0 अतुल कुमार सिंह डॉ0 यशपाल सिंह एवं डॉ0 विनय कुमार मिश्र, अध्यक्ष द्वारा पराशर एग्रोटेक बायो प्राइवेट लिमिटेड, वाराणसी के निदेशक श्री

शेखर पाण्डेय को दिनांक दिसम्बर 30, 2020 को संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में किया गया। इस मौके पर संस्थान के आई.टी.एम.यू. प्रभारी डॉ0 हनुमान सहाय जाट भी मौजूद रहे।

जिपकिट प्रौद्योगिकी विवरण भी इसके द्वारा प्रौद्योगिकी लाइसेंस समझौते के अनुसार फर्म को प्रेषित किया गया है। यह किट उपयोक्ता के प्रति मैत्रीपूर्ण है और प्रक्षेत्र पदाधिकारियों, शोधकर्ताओं, संबंधित विभागीय अधिकारियों के साथ उन किसानों के लिए भी उपयोगी है जो मृदा की क्षारीयता एवं फसलों के अनुकूलतम उत्पादन हेतु आवश्यक खनिज जिप्सम की मात्रा के निर्धारण की जिज्ञासा रखते हैं। जिपकिट का व्यवसायीकरण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के द्वारा अनुमोदित है।